

25. लाला लाजपत राय

-डॉ० पीयूष गुलेरी



भारत-भूमि को विदेशी शासकों के चुंगल से मुक्त कराने में जिन महापुरुषों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया उनमें लाला लाजपत राय का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है। देशवासियों को सदियों की परतंत्रता और दासता से त्राण दिलाने हेतु तन, मन, धन स्वदेश के अर्पण कर देने के कारण उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। लाला जी दृढ़ संकल्प, अद्भुत साहस, अप्रतिम शौर्य और अडिग विश्वास के धनी थे। वे अपनी धुन के पक्के थे। वर्तमान काल में पंजाब में उन जैसा अद्भुत महापुरुष पैदा ही नहीं हुआ। कदाचित् इसी आधार पर

उन्हें 'पंजाब केसरी' और 'भारत केसरी' की उपाधियों से विभूषित किया जाता है। यों इतिहास साक्षी है कि उनका जीवन सचमुच शेर का-सा जीवन था। वे अपनी विकराल दहाड़ से विदेशियों को विस्मित करके उनके छक्के छुड़ा देते थे। कहना न होगा कि पंजाब केसरी लाला लाजपत राय विदेशी-राज्य के जंगल में 'वनराज केसरी' की भाँति निर्द्वन्द्व-भाव से विचरण किया करते थे। जीते और मरते तो सभी हैं, किन्तु लाला जी का जन्म और मरण कतिपय विरलों को ही नसीब होता है।

पंजाब-केसरी लाला लाजपत राय का जन्म पंजाब के जिला फिरोज़पुर के ढुडिके गाँव में सन् 1895 को हुआ था। उनके पिता श्री राधाकृष्ण अग्रवाल बड़े विद्वान और धार्मिक प्रवृत्ति के महानुभाव थे। लाला जी विद्वान पिता की सुयोग्य और कुशाग्रबुद्धि संतान थे। बाल्यकाल से ही वे गंभीर, कर्मठ, परिश्रमी और सतत् अभ्यासरत् रहने वाले व्यक्ति थे। प्रत्येक परीक्षा में प्रथम रहकर उन्होंने छात्रवृत्तियाँ अर्जित की थीं। दसवीं के पश्चात् मुख्तयारी करके आगामी अध्ययन के आधार पर उन्होंने वकालत पास की। वे नामी धामी वकील थे। उनकी वकील के रूप में माँग उत्तरोत्तर बढ़ती ही गई। किन्तु लाला जी तो किसी और ही मिट्टी के बने थे। वे अपनी इस उपलब्धि से संतुष्ट न हुए। उनका जन्म तो महान् कार्य सम्पन्न करने के लिए हुआ था। वे देश गौरव के लिए कुछ अविस्मरणीय कर गुज़रने के लिए आतुर थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा चलाए गए आर्य समाज से प्रभावित होकर वे समाज सेवा के क्षेत्र में कूद पड़े। वे देशवासियों को अनपढ़ता, अंधविश्वास, रूढ़ियों और सामाजिक कुप्रथाओं से मुक्ति दिलाने के पक्षधर थे। अस्तु, समाज सेवा को उन्होंने अपने जीवन का मूलाधार बना लिया था। डी.ए.वी. कॉलेज की स्थापना में अपूर्व योगदान देकर कुछ दिनों तक उन्होंने अवैतनिक अध्यापन कार्य भी किया। हिसार के अकाल-ग्रस्त और कांगड़ा के भूकम्प पीड़ित लोगों की उन्होंने जी-जान से सेवा की। दुःखी, पीड़ित और संतप्त मानवता की पुकार को वे कभी अनसुनी नहीं करते थे।

उनके जैसा उत्सर्ग, त्याग और स्वयं को जोखिम में डालकर मानवता का हित-भाव स्मरणीय और अनुकरणीय है।

लाला लाजपत राय देश की राजनीति के सजग अध्येता थे। शनैः-शनैः उनकी यह धारणा बन गई कि यदि देश और समाज-सेवा के लिए कुछ करना अभीष्ट है तो देश की राजनीति से अलग नहीं रहा जा सकता। फलतः सन् 1907 में उन्होंने सक्रिय रूप से राजनीति में प्रवेश किया। राजनैतिक क्षितिज पर उनका उदय बिल्कुल अनोखा था। उस समय अंग्रेजों के इशारे पर सैयद अहमद खाँ मुस्लिम समुदाय को कांग्रेस के विरुद्ध बरगलाने में लगे हुए थे। वे मुसलमानों को भारतीय राष्ट्रीयता से अलग होने के लिए उकसाहट भरे लेख लिख रहे थे। लाला जी ने उनके इस अराष्ट्रीय और देश-विरोधी कार्य के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की। बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय जैसे तीन महान् नेताओं की 'तिकड़ी' ने ब्रिटिश साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था। 'बाल-पाल-लाल' नामक दल की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने के कारण लाला जी को माण्डले जेल में डाल दिया गया। किन्तु बाद में स्वास्थ्य के आधार पर छोड़ दिया गया। उन्होंने अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों की यात्रा करके यूरोप के लोगों में अंग्रेजी-साम्राज्य के विरुद्ध भारतीय जनता की स्वतंत्रता की मांग को उजागर किया।

भारत लौटकर वे शान्ति से रहने वाले नहीं थे। महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए 'असहयोग आंदोलन' में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया। परिणामस्वरूप, उन्हें बंदी बना लिया गया। किन्तु बाद में रोगग्रस्त होने के कारण छोड़ दिया गया। वे कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन के सभापति बने और कालांतर में हिन्दू महासभा के सक्रिय सदस्य भी बने। सभाओं में भाषण कर्ज़ा के रूप में तो लाला जी अद्वितीय थे। उनके भाषण भारतीय जनता में निरंतर क्रांति की भावना भरते रहे।

लाला लाजपत राय के जीवन की सबसे बड़ी घटना 'साइमन कमीशन' की बहिष्कृति थी। 30 अक्टूबर, 1928 को लाला जी ने 'साइमन कमीशन' के लाहौर-आगमन के बहिष्कार में सक्रिय रूप से भाग लिया। उनके हाथ में झंडा था और जनता की अपार भीड़ 'साइमन वापस जाओ' के नारे लगाती हुई आगे बढ़ रही थी। अंग्रेज सरकार के मैजिस्ट्रेट ने लाठीचार्ज का आदेश दे दिया। घुड़सवार सिपाहियों ने निहत्थे लोगों को कुचलना आरम्भ कर दिया। इस पर भी लोग टस-से-मस न हुए। फिर लोगों पर तड़तड़ लाठियाँ बरसाई गईं। सांडर्स नामक अंग्रेज अफसर ने लाला जी पर लाठियों से निर्मम प्रहार किये। इन लाठियों ने उनके शारीरिक ढाँचे को तोड़ कर रख दिया। उस समय लाला लाजपत राय ने गंभीर स्वर में भविष्यवाणी की थी : "मेरे शरीर पर पड़ी एक-एक लाठी भारत में अंग्रेजी साम्राज्य के कफ़न की एक-एक कील साबित होगी।" परिणामस्वरूप, 17 नवम्बर सन् 1928 को वे स्वर्ग सिधार गए।

लाल लाजपत राय का राष्ट्र-प्रेम, देशभक्ति और बलिदान हमें सदैव के लिए प्रेरणा देता रहेगा।

अभ्यास

1. लाला लाजपत राय को पंजाब केसरी क्यों कहा जाता है ?
2. लाला लाजपत राय के किन्हीं दो महान् गुणों पर टिप्पणी कीजिए।
3. लाला लाजपत राय के जीवन और व्यक्तित्व से हमें क्या प्रेरणा मिलती है ?
4. लाला लाजपत राय का देहांत कैसे हुआ ?
5. 'तिकड़ी' शब्द की व्याख्या कीजिए।

